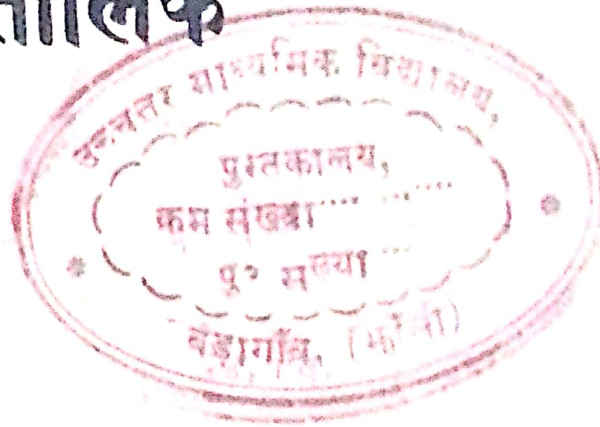


वैतालिक



हो 693

992

फिर अपने को याद करो ।
उठो अलौकिक भाव भरो ॥

श्रीमैथिलीशरण गुप्त

२०२२ वि०

मूल्य
.४० नये पैसे

श्रीसुमित्रानन्दन गुप्त द्वारा
साहित्य मृद्रण, चिरगाँव (भाँसी) में मुद्रित ।
तथा
साहित्य-सदन, चिरगाँव (भाँसी) से प्रकाशित ।



श्रीगणेशाय नमः

वैतालिक

श्रीरवि-कुल-मणि रघुनायक ,
तुमको रहें दीप्तिदायक ।
श्रीसीता धन-धान्य भरें ,
उर्वर कर्म - क्षेत्र करें ॥
नई पौ फटी, रात कटी ;
तम की अन्तर-पटी हटी ।
उठो, उठो, बोलो, बोलो ,
खोलो मनो - द्वार खोलो ॥

बल्द किवाड़ न रखो अब ,
कोई भाड़ न रखो अब ।

रुद्ध साँस बह जाने दो ,
शुद्ध समीरण आने दो ॥
हिम-कण उसे उड़ाने दो ,
मिथ्या स्वप्न छुड़ाने दो ।

उस कल्पित माया से क्या ?
प्राण-हीन काया से क्या ?
चिर निद्रा का जाल कटे ,
युग युग का जंजाल हटे ।

हृदय हृदय से लगने दो ;
भय भगने, जय जगने दो ॥
उर की आग उभड़ने दो ,
प्रेमाहुतियाँ पड़ने दो ।

सरस सुगन्धि समाने दो ,
मस्तक को बल पाने दो ॥
बने कूप मण्डूक निरे ,
रहो घरों में ही न घिरे ।

आओ, अब बाहर आओ ,
ममता में समता लाओ ॥

